श्री कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजि०) कुरूक्षेत्र

गीता भवन ट्रस्ट बिलडिंग, ब्रह्मसरोवर तट, कुरूक्षेत्र

✆ 01744-292758

गीता भवन कुरूक्षेत्र का दृश्य

गीता भवन लंगर हाल में भण्डारा पाते हुए संत महात्मा

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति का गठन 1918 में स्वर्गीय श्री दियाली राम जी पटियाला निवासी द्वारा किया गया और 1921 में समिति को रजिस्ट्रड करवाया तथा भगत तुलसी राम जी, पटियाला और श्री अमरजीत चोपड़ा (Retd. Session Judge), लुधियाना ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। तब से लेकर आज तक यह समिति आप लोगों के सहयोग से कुरूक्षेत्र के जीणोंद्धार के लिए तथा साधु संतों और गरीबों को लंगर प्रदान करने के लिए कार्य कर रही है।

कुरूक्षेत्र की महिमा

कुरूक्षेत्र सभी तीर्थों में से सर्वाधिक प्रेरक स्थल है। इस स्थल में 48कोस की भूमि तथा 360 तीर्थ है तथा इस धरती के प्रत्येक कण में पवित्रता है। यह अमर ख्याति की घटनाओं से पूर्ण, सत्य तथा न्याय के संघर्ष-प्रसिद्ध महाभारत का घटना-स्थल है। यह गीता का जन्म स्थान है— वह गीता जो वैचारिक संसार में मन पर अधिक से अधिक प्रभावशाली होती जाती है और जो ऐसे शाश्वत सत्यों से भरपूर है, जो सभी जातियों तथा प्रत्येक काल की जनता के लिए प्रेरणादायक हैं गीता एक देश की नहीं अपितु समस्त संसार की गीता है। इसमें मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान है।

कुरूक्षेत्र में दान तप का फल

पुराणों में उल्लेख आता है कि कुरूक्षेत्र में किया हुआ दान, तप इत्यादि 13 गुणी वृद्धि को प्राप्त होता है। यानी 13x13 13x13 13x13 13x13 13x13 13x13 13x13 13x13 13x13

यदि कोई दानी सज्जन 5 रुपये प्रति दिन दान करें तो 13 दिन में 65 रुपये की बिजाय 845 रुपये का फल प्राप्त होगा।

कुरूक्षेत्र में मुख्य दर्शनीय तीर्थ तथा सरोवर स्थल

- ☆ गीता भवन
- ☆ ब्रह्मसरोवर
- ☆ बिरला मन्दिर
- ☆ जयराम विद्यापीठ
- ☆ गौड़िया मठ
- ☆ सन्नहीत सरोवर
- ☆ कौरव पांडव मन्दिर
- ☆ सर्वेश्वर महादेव
- ☆ दु:ख भंजन
- ☆ चन्द्रकुप
- ☆ गीता धाम
- ☆ श्री कृष्ण संग्राहलय
- ☆ थानेश्वर महादेव
- ☆ शेखचिल्ली का मकबरा
- ☆ भद्रकाली मन्दिर
- ☆ बाण गंगा
- ☆ ज्योतिसर
- ☆ पनोरमा विज्ञान केन्द्र

सेवा कार्य

लंगर

हर रोज प्रात: 11.30 से 12.30 बजे लंगर चलता है जिसमें लगभग 100 से 200 संत, महात्मा, गरीब लोग पेट भर भोजन पाते हैं। सोमवती अमावस और सूर्य ग्रहण को तो इनकी संख्या हज़ारों में होती है।

धर्मशाला

भवन में यात्रियों के ठहरने के लिए 125 कमरे तथा 2 हाल बने हुए हैं। इन कमरों में यात्री की सुविधा के लिये बिजली, पानी व बिस्तर आदि का प्रबन्ध है तथा यात्री के लिये चाय, नाश्ता और दोनों समय के भोजन का भी प्रबन्ध है। जो यात्री दान के रूप में सहयोग देना चाहते हैं वह दान देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

अंधविकलांग आश्रम

यहाँ पर सूरदास रहते हैं। जिनके खाने पीने, तेल-साबुन, वस्त्र व दवाई के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से व्यय करने हेतु मासिक भत्ता भी दिया जाता है।

भव्य मन्दिर

गीता भवन के प्रांगण में एक विशाल मन्दिर है जिसमें बावन भगवान, शंकर, दुर्गा, राधे-कृष्ण, हनुमान जी व सभी देवी-देवताओं की दर्शनीय मूर्तियां हैं।

वाटर कूलर

यात्रियों की सुविधा हेतु शुद्ध शीतल जल का प्रबन्ध है।

डचकित्सा शिविर

सूर्य ग्रहण जैसे बड़े पर्वों पर चिकित्सा शिविर की भी व्यवस्था की जाती है।

विशेष निवेदन

पावन धाम कुरूक्षेत्र भारत के मुख्य तीर्थ-स्थलों में से एक है। जहां पर सूर्य ग्रहण जैसे अवसरों पर लाखों यात्री ब्रह्मसरोवर में एक ही समय स्नान कर सकते हैं। इतना बड़ा सरोवर आपके गीता भवन के बिलकुल आगे है। ऐसे सभी सुविधाओं से परिपूर्ण अति उत्तम स्थान बहुत कम मिलते है। अत: आप जब भी आयें अपने गीता भवन में ठहरना न भूलें और यथा शक्ति ऐसे धर्मार्थ कार्यो में योगदान देकर पुण्य के भागी बनें।

लंगर मासिक सदस्य

लंगर को सुचारू रूप से चलाने के लिए आप से निवेदन है कि आप भी लंगर के मासिक सदस्य बने। जिस का मासिक शुल्क कम से कम 25 रुपये मासिक या यथाशक्ति जितना उचित समझे प्रति मास लंगर में दान के लिए अवश्य दें जिसे आप मनीआर्डर द्वारा भी भेज सकते हैं। हमने इसे एकत्र करने के लिए श्री रमेश चन्द्र कपूर, एवं श्री लक्ष्मण दास पटियाला निवासियों को नियुक्त किया हुआ है, जो आपके घर/कार्यालय से हर महीने आकर ले जाया करेगें।

लंगर FDR योजना

यदि आप मासिक सहयोग देने की जगह इक्ट्ठा ही सहयोग देना चाहते है तो हमारी संस्था ने FDR योजना बनाई है जिस में आप कम से कम 500 रुपये या यथाशक्ति दान देकर संस्था के नाम पर FDR बना सकते हैं। संस्था इस FDR का व्याज हर माह बैंक से ले लेगीं और FDR सदा बैंक में ही रहेगी।

अनाज का सहयोग

कनक और चावल प्रतिवर्ष, निम्नलिखित मंडीयों से आता है।

पटियाला, समाना, घग्गा, पातड़ाँ, दिड़बा, नाभा, सुनाम, भवानीगढ़, देवीगढ़, भुन्नरहेड़ी, राजपुरा, कुरूक्षेत्र।

हमारी भावी योजनायें

लंगर हाल -संस्था द्वारा 42'×42' का लंगर हाल बनाया जा रहा है आप से निवेदन है कि आप इस कार्य के लिए सिमिंट, सरिया यां यथाशक्ति दान दें।

सबमर्सिबल पम्प -भूमि में जल सतर नीचे जाने के कारण सबमर्सिबल पम्प लगाने की योजना है।

शौचालय -यात्रियों के अधिक आवागमन के कारण 10 और नये शौचालयों का निर्माण करवाना है।

जनरेटर सैट - बिजली की कमी को पूरा करने तथा यात्रियों की सुविधा के लिए 6 K.W. वाले 2 जनरेटर सैट लगवाने की योजना है।

बिस्तर व दरियाँ -शीतकाल में यात्रियों हेतु सौ बिस्तर व सभी कमरों में नई दरियाँ बदलवाने की योजना है।

प्लास्टिक वाटर टैंक -विद्युत अभाव के कारण अधिक पानी भरने के लिये प्लास्टिक वाटर टैंक की जरूरत है।

LIFE

WHAT GITA SAYS ABOUT LIFE

Life is a Challange	Meet it
Life is Gift	Accept it
Life is an Adventure	Dare it
Life is a Sorrow	Overcome it
Life is a Tragedy	Face it
Life is a Duty	Perform it
Life is a Game	Play it
Life is a Mystry	Unfold it
Life is a Song	Sing it
Life is an Opportunity	Avail it
Life is a Journey	Complete it
Life is a Promise	Fulfil it
Life is a Love	Enjoy it
Life is a Beauty	Praise it
Life is a Spirit	Realise it
Life is a Struggle	Fight it

ब्रह्म सरोवर की महिमा

कुरूक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर के सम्बन्ध में इतिहास बताता है कि सृष्टि की रचना के समय श्री ब्रह्म जी ने इसी सरोवर पर हवन किया था। तथा सभी देवता पधारे थे। समय के अनुसार यह ब्रह्मसरोवर एक छोटी सी छपड़ी बन गई। महाराजा कुरू को ऋषियों का शराफ था कि आप रात्री को शिला बन जाओगे और सूरज निकलने पर चेतना आयेगी एक समय महाराजा कुरू शिकार के पीछे दोड़े और शिकार छपड़ी में अलोप हो गया। राजा ने बाण मारा जब राजा को शिकार न दिखाई दिया तो उसने अपना तीर छपड़ी के कीचड़ से निकाला। जहां जहां राजा के उंगलियों में गारा लगा रात्री को उनमें जान थी। राज पंडितों ने कहा कि राजन उस छपड़ी पर हम सब चलते है सभी वहां गए। राजा से प्रार्थना की कि यह कीचड़ अपने सारे बदन पर लगा लें। राजन ने ऐसा ही किया और राजन को ऋषियों द्वारा दिया हुआ शराफ दूर हो गया। राजा ने लड़के को गद्दी देकर आप इस छपड़ी की खोज में निकल गया खोज करने से मालूम हुआ कि यह ब्रह्म सरोवर है राजा ने सोने का हल बनाकर एक ओर शंकर महाराजा जी से नन्दीगन लिया दूसरी ओर यमराज जी से भैंसा लिया। तथा हल चलाने लगा। राजा ने अंथक मेहनत की तब विष्णु भगवान परीक्षा लेने आए। राजन से कहने लगे कि हे राजन तू क्या चाहता है। इस पर राजन ने उत्तर दिया कि मेरी यही इच्छा है कि इस भूमि का नाम धर्म भूमि हो। विष्णु भगवान ने कहा बीज कहां है। मेरा शरीर है। पहले राजा ने दाई भूजा खड़ी की श्री भगवान ने सुदर्शन चक्कर से टुकड़े-टुकड़े करके 48कोस में फैंक दिये। इसी प्रकार बाई भूजा मस्तक, भगवान ने प्रसन्न होकर राजन को जीवित किया। हे राजन्! इस भूमि का नाम धर्मक्षेत्र होगा। श्री गीता जी के पहले अध्याय के पहले श्लोक में लिखा है :

धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्रः समवेता ईशा ममता।
पाण्डवः अश्चेय कि कुरुतव चश्या।